अमर उजाला

Page No : 06 Top

साजिश और सत्ता संघर्ष की दास्तां ने झकझोरा

रिद्धिमा में इंदिरा पार्थसारथी कृत नाटक 'तख्त' का किया गया मंचन, औरंगजेब और दारा शिकोह में जंग की है कहानी

रिद्धिमा सभागार में 'तख्त' नाटक का मंचन करते कलाकार। संवाद

बरेली। रिद्धिमा सभागार में रविवार तख्त नाटक का मंचन किया गया। नाटक मुगल शासन के उस दौर को पेश करता है, जब वर्ष 1657 में शाहजहां अपने बड़े बेटे दारा शिकोह को बादशाह बनाने का एलान करता है। शाहजहां बेटे दारा से वादा करवाता है कि वह ताजमहल की तर्ज पर स्याह महल बनवाएगा।

दारा पिता के स्नेह में वादा तो कर देता है, लेकिन हर कोई स्याह महल के विरोध में होता है। शाहजहां जब बीमार पड़ने लगा तो उसके चारों बेटे दारा, शुजा, मुराद और औरंगजेब के बीच तख्त पाने की जंग शुरू हो जाती है। इसमें असली जंग दारा और औरंगजेब के बीच थी। शाहजहां की दो बेटियों में जहांआरा दारा के साथ तो रोशनआरा औरंगजेब के साथ थी।

बेटों के दांवपेच, संबंध, सत्ता संघर्ष, रंजिश और साजिश के बीच शाहजहां खुद से जंग करता नजर आता है। औरंगजेब और दारा की फौज के बीच हुई जंग में दारा की शिकस्त होती है। औरंगजेब तख्त हथिया लेता है और शाहजहां व जहांआरा को बंदी बना लेता है। औरंगजेब से बचने के लिए दारा मलिक जीवन से मदद मांगता है, लेकिन मलिक दारा को धोखा देकर उसे औरंगजेब के हवाले कर देता है।

औरंगजेब दारा को इस्लाम का दुश्मन करार देते हुए मौत की सजा देता है। नाटक के अंत में औरंगजेब खुद से जंग करता नजर आता है, जहां उसे अपनी जिंदगी का कट्टरपन दिखाई देता है। वह खुद को कई लोग के कत्ल का दोषी मानता है। नाटक के अंत में औरंगजेब का वाक्य ''क्या मैं एक मजहबी कठमुल्ला हूं या एक यतीम'' दर्शकों को झकझोर गया।

नाटक में औरंगजेब की भूमिका इसके निर्देशक अखिलेश नरायण ने खुद निभाई। साथ ही सुमित गौड़, परमजीत, जागृति संपूर्ण, हेमलता पांडे, जय सिंह रावत, प्रियंका भारती, समीर कुरैशी, नितिन, साक्षी शर्मा सशक्त अभिनय किया। ब्यूरो